ठाकुर का कुआँ **प्रश्नोत्तर & वर्कशीट – PART - 2**

(रात के नौ बजे थे। ---------------------------- परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं !)

1. नए शब्द –

* थके-मांदे - ക്ഷീണിച്ചു തളർന്ന	* मज़दूर – തൊഴിലാളികൾ	* बेफिक्रे - ചിന്തയില്ലാതെ
* जमा थे - ഒന്നിച്ചുകൂടി നിന്നിരുന്നു	* मैदानी बहादुरी - കൈയ്യൂക്ക്	* बहादुरी - ധീരത
* ज़माना - കാലഘട്ടം	* मौका – അവസരം	* कानूनी बहादुरी – നിയമപരമായ നടപടി
* होशियारी - സാമർത്ഥ്യം	* थानेदार - പോലീസ് ഇൻസ്പെക്ടർ	* खास मुकदमा - പ്രത്യേക കേസ്
* रिश्वत - കൈക്കൂലി	* साफ निकल जाना – ഒരു കുഴപ്പവുമില്ലാതെ രക്ഷപെടുക	* अक्लमंदी - ബുദ്ധി
* मार्के का - സവിശേഷമായ	* नकल – പകർപ്പ്	* नाज़िर - സൂപ്പർവൈസർ
* मोहतमिम - മാനേജർ	* माँगना - ആവശ്യപ്പെടുക	* बेपैसे-कौडी – ചില്ലിക്കാശുപോലും ചെലവാകാതെ
* ढंग – രീതി	* कुप्पी - മണ്ണെണ്ണ വിളക്ക്	* धुँधली रोशनी - മങ്ങിയ വെളിച്ചം
* जगत - കിണററിൻ കര	* आड – മറവ്	* मौके का इंतज़ार करना – അവസരം കാത്തിരിക്കുക
* रोकना – തടയുക	* बदनसीब - ഭാഗ്യഹീനരായ	* विद्रोही दिल - എതിർക്കുന്ന മനസ്സ്
* रिवाज़ी पाबंदियाँ – ആചാരപരമായ വിലക്കുകൾ	* मज़बूरियाँ – ബുദ്ധിമുട്ടുകൾ	* चोट करना - മുറിവേൽപ്പിക്കുക
* नीच – निम्न താഴ്ന്നവർ	* ऊँच – उच्च ഉയർന്നവർ	* गला में ताग डालना - കഴുത്തിൽ ചരടിടുക
* छंटा - നികൃഷ്ടരായ	* चोरी – കളവ്	* जाल-फरेब – വഞ്ചന
* झूठा मुकदमा - കള്ളക്കേസ്	* बेचारा - പാവപ്പെട്ട	* गडरिया - ആട്ടിടയൻ
* भेड - ചെമ്മരിയാട്	* चुराना - മോഷ്ടിക്കുക	* जुआ - ചൂതുകളി
* घी में तेल मिलाकर बेचना – നെയ്യിൽ എണ്ണകലർത്തി വിൽക്കുക	* मजूरी देना - കൂലി കൊടുക്കുക	* नानी मरना - വളരെ വിഷമിക്കുക, ഒഴിവുകഴിവു പറയുക
* गली – തെരുവ്	* चिल्लाना - വിളിച്ചുപറയുക	* रस-भरी आँखें - കാമാർത്തമായ കണ്ണുകൾ
* छाती पर साँप लोटना - വളരെ പരിഭ്രമിക്കുക, അസൂയപ്പെടുക	* छाती - നെഞ്ച്	* घमंड - അഹങ്കാരം

2. विशेषण शब्द लिखें।

1. थके-मांदे मज़दूर - थके-मांदे   2. खास मुकदमा - खास   3. धुँधली रोशनी - धुँधली
4. सारा गाँव - सारा   5. विद्रोही दिल – विद्रोही   6. रिवाज़ी पाबंदियाँ - रिवाज़ी
7. झूठे मुकदमे – झूठे   8. बेचारे गडरिया - बेचारे   9. रस-भरी आँखें - रस-भरी

3. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. साफ निकल जाना – बिना किसी तकलीफ से बच जाना
2. छाती पर साँप लोटना– ईर्ष्या में जलना/अत्यंत जलन होना
3. मौके का इंतज़ार करना– अवसर की प्रतीक्षा करना

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1.‘ हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ‘– यहाँ किस सामाजिक समस्या की ओर संकेत है ?

जातिप्रथा

2.‘ सिर्फ ये बदनज़ीब नहीं भर सकते ।‘– क्यों ?

वे नीची जाति के हैं।

3.‘ एक के क छंटे ’– का मतलब क्या है ?

सबसे बुरा

4. गंगी का विद्रोही दिल किसपर चोटें करने लगा ?

रिवाज़ी पाबंदियों और मज़बूरियों पर

5. ‘ ठाकुर का कुआँ ’ कहानी में चर्चित मुख्य समस्या क्या है ?

ऊँच-नीच का भेदभाव

6. मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका ।– इसका क्या मतलब है ?

पुराने ज़माने में उच्च वर्ग के लोग अपनी शक्ति के सहारे गरीबों का शोषण करते थे । आज के बदलते ज़माने में कानून को मान्यता मिली है । लेकिन संपन्न वर्ग के लोग रिश्वत और शिफारिश के सहारे कानून को भी वश में कर लिए हैं ।

7. ऊँच–नीच के भेदभाव पर अपना विचार क्या है ? लिखें ।

हमें ऊँच–नीच के भेदभावों को छोडना चाहिए । जाति प्रथा के कारण गरीब लोगों को कई प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का शिकार बनना पडता है । किसीको जन्म के आधार पर नीच मानना निंदनीय अपराध है ।

8. रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर गंगी का दिल विद्रोह करता है । क्या आप इसका समर्थन करते हैं ? क्यों ?

पानी प्रकृति का अनमोल वरदान है । इसपर सबका समान अधिकार है । पानी भरने से कुछ लोगों को मना करना बिलकुल अन्याय है । इसके विरुद्ध विद्रोह करना ही उचित है ।

9. गंगी के विद्रोही दिल में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध क्या-क्या विचार आते हैं ?

हम क्यों नीच हैं ? उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं । लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है । हम जैसे अछूत असहाय होकर उनके अत्याचार के शिकार हो रहे हैं । यह हालत तो बदल जाना ही होगा ।

10.' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? '- गंगी के इस विचार पर आपका मत क्या है ?

समाज में व्याप्त जाति भेद पर गंगी का आक्रोश यहाँ प्रकट है । उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं । लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है । अछूत असहाय होकर अत्याचार के शिकार हो रहे हैं । यह हालत तो बदल जाना ही होगा । जन्म के आधार पर किसीको नीच मानना निंदनीय अपराध है । ऊँच-नीच की भावनाओं को तोडकर एक मन से करने से ही सामाजिक उन्नति संभव है । जाति भेद मानवता व ईश्वर के प्रति अपराध है ।

11. गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा । - यहाँ प्रस्तुत रिवाज़ी पाबंदी और मज़बूरी क्या है ?

जाति के नाम पर समाज में बडा भेदभाव था । निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों को पाबंदी थी । निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे । उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं की तय करने केलिए भी वे विवश थे ।

12. टिप्पणी – समाज में सभी लोगों को समान अवसर का अधिकार है

हमारे देश में अनेक लोग रहते हैं । उनके रंग, रूप, वेश, भाषा आदि भिन्न हैं । कुछ लोग अमीर हैं तो कुछ लोग गरीब हैं । लेकिन इनके बीच सामाजिक असमानता हम देखते हैं । यह आज की एक बडी समस्या है । अन्न, वस्त्र, घर आदि मानव की आवश्यकताएँ हैं । लेकिन समाज के कुछ लोग इनसे वंचित हैं । हमारे संविधान के अनुसार हर एक नागरिक को खाना मिलने का, घर मिलने का, कपडे मिलने का और पीने के पानी मिलने का अधिकार है । फिर भी समाज के सभ्य कहे जानेवाले संपन्न वर्ग गरीब या निम्न वर्ग के लोगों को कुचल डालते हैं । इस कारण निम्न वर्ग के लोगों को पीने केलिए शुद्ध पानी भी नहीं मिलता है । यह उचित नहीं है । समाज के सभी लोगों को समान रूप से जीने का अवसर मिलना चाहिए ।

14. पोस्टर (points) संदेश – जातिप्रथा एक अभिशाप है

जातिप्रथा एक अभिशाप है

1. मानव–मानव के बीच जाति भेद न करें...
   जातीय असमानता सामाजिक अपराध, इसे खतम करें।
2. छुआछूत दूर करो...
   समाज की उन्नति पाओ।
3. नीच कुल में जन्म लेना व्यक्ति का अपना दोष नहीं...
   जन्म के आधार पर नीच जाति मानना निंदनीय अपराध।
4. सभी मानव समान...
   जाति न देखो, कर्म देखो।
5. एक देश, एक जाति, एक धर्म
   जाति ने नाम पर अत्याचार न करें।
6. मनुष्य को जाति के नाम पर नहीं मनुष्य की तरह जानो...
   याद दें... आपत्ति, संकट पर कोई जाति नहीं होती।
7. धरती पर सभी का हक एक जैसा
   जाति के नाम पर किसीसे यह अधिकार मत छीनो।
8. करो रोकथाम जातिप्रता का ...
   अपनेलिए... मनुष्यता केलिए...
9. जातीय असमानता संविधान के खिलाफ...
   इसे मिटाओ...सभी मानवों को समान मानो।

विश्व जातिगत भेदभाव विरुद्ध दिवस– मार्च 21

13. टिप्पणी – जाति भेद एक अभिशाप है

हमारे समाज में जाति भेद एक बडी समस्या है। आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। जाति के नाम पर मनुष्य को अलग-अलग विभागों में बाँटना अभिशाप है। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोग से कठिन मेहनत करवाते हैं। लेकिन उसे उचित वेतन नहीं देता है। सार्वजनिक कुएँ से पानी भरना, इष्ट भोजन खाना, आवश्यक वस्त्र पहनना, मंदिर में प्रवेश करना आदि को उन्हें नहीं मिलता है। उनके बच्चों को स्कूल में जाकर पढने का अवकाश तक नहीं है। निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों में पाबंदी थी। निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे। उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं को तय करने केलिए भी वे विवश थे। इन भेदभावों से मुक्ति आवश्यक है। जाति प्रथा को इस समाज से नहीं इस देश से दूर करना चाहिए। इससे ही समाज की तथा देश की भलाई होती है।

15. पोस्टर (संगोष्ठी) – जातिप्रथा एक अभिशाप है

सरकारी जी.एच.एस.एस, कोल्लम
संगोष्ठी
विषय – जातिप्रथा एक अभिशाप है
आयोजन – हिंदी मंच
2018 जनवरी 18, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में
उद्घाटन – शिक्षा मंत्री, केरल
प्रस्तुति – हिंदी अध्यापक
भाग लें... लाभ उठाएँ...
सबका स्वागत

5. आशय समझकर सही मिलान करके लिखें।

1. रात के नौ बजे गंगी – माफी या रियायत की उम्मीद नहीं।
   किसीकेलिए रोक नहीं – रिवाज़ी पाबंदियों और मज़बूरियों पर चोटें करने लगा।
   गंगी का विद्रोही दिल – सिर्फ ये बदनसीब नहीं भर सकते।
   वह पकड ली गई तो – ठाकुर के कुएँ से पानी लेने पहुँची।

2. रिवाज़ी पाबंदियों का - अपराध करते हैं।
   ऊँच-नीच का भेदभाव - विरोध करना चाहिए।
   छंटे लोग - सारा गाँव पीता है।
   ठाकुर के कुएँ का पानी - स्वस्थ समाज का लक्षण नहीं है।

<u>व्याकरण अंश</u>

1. नमूने के अनुसार वाक्य बदलकर लिखें।

1. गंगी इंतज़ार करने लगी। जोखू इंतज़ार करने लगा।
   रोशनी कुएँ पर आने लगी। प्रकाश कुएँ पर ---------- ।

2. प्रकाश उभर आता था। रोशनी उभर आती थी।
   दर्द समझ सकता था। पीडा समझ ---------- ।

3. रोशनी कुएँ पर आ रही थी। प्रकाश कुएँ पर ----------।

2. कोष्ठक से सही क्रिया रूप से वाक्य की पूर्ति करें।

1. कुप्पी की रोशनी ----------। (आने लगता है, आने लगते हैं, आने लगती हैं, आने लगती है)
2. गंगी पानी लेने ----------। (पहुँचता है, पहुँचती है, पहुँचती हैं, पहुँचते हैं)
3. वे रस-भरी आँख से ----------। (देखती है, देखती हैं, देखता है, देखते हैं)

3. सही विकल्प चुनकर लिखें।

1. कौन + केलिए = किसीकेलिए	कोई + केलिए = किसीकेलिए	किस + केलिए = किसीकेलिए	किसी + केलिए = किसीकेलिए
2. मैं + से = हमसे	तू + से = हमसे	तुम + से = हमसे	हम + से = हमसे

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCR145 M 9567224545

4. सही वाक्य पहचानकर लिखें ।

1. रोशनी कुएँ पर आने लगा ।
   रोशनी कुएँ पर आने लगे ।
   रोशनी कुएँ पर आने लगी ।
   रोशनी कुएँ पर आने लगीं ।

2. उसे इंतज़ार करना पडते हैं ।
   उसे इंतज़ार करना पडता है ।
   उसे इंतज़ार करना पडती हैं ।
   उसे इंतज़ार करना पडती है ।

5. कोष्ठक से उचित शब्द सही स्थान पर रखकर वाक्य पिरामिड की पूर्ति करें ।

1. कुएँ पर आ रही थी । (धुंधली, कुप्पी की)
   रोशनी कुएँ पर आ रही थी ।
   ----------।
   ----------।

2. गंगी इंतज़ार करने लगी । (मौके का, जगत की)
   गंगी आड में बैठी इंतज़ार करने लगी ।
   ----------।
   ----------।

6. रेखांकित शब्द के बदले कोष्ठक के शब्द का प्रयोग करके वाक्य का पुनर्लेखन करें ।

1. <u>रोशनी</u> कुएँ पर आ रही थी । (प्रकाश)
2. <u>प्रतीक्षा</u> करनी पडती थी । (इंतज़ार)

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 M 9567224545